अध्याय–3

नीति के दोहे : रहीम

जन्म – सन् 1556 ई.
मृत्यु – सन् 1626 ई.

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनके पिता बैरम खाँ ने मुगल बादशाह हुमायूँ की मृत्यु के बाद अकबर के संरक्षक का दायित्व निभाया था। रहीम बचपन से ही साहित्य–प्रेमी और बुद्धिमान थे। उन्हें अपने माता–पिता से वीरता, राजनीति, दानवीरता तथा काव्य जैसे गुण विरासत में मिले थे।

रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे सामंजस्यवादी थे। श्रीकृष्ण के प्रति भी उनकी अथाह श्रद्धा थी। उन्होंने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों एवं पात्रों का भी बखूबी उल्लेख किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और शृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। रहीम को दोहा, सोरठा, बरवै तथा सवैया छंदों में विशेष महारत हासिल थी।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– दोहावली, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, मदनाष्टक तथा नगरशोभा। अपने अनुभवों को उन्होंने जिस सरल शैली में व्यक्त किया वह अद्‌भुत है।

प्रस्तुत पाठ में चयनित रहीम के दोहों द्वारा हमें परोपकार, सज्जनता, परदुःखकातरता, स्वाभिमान एवं लोक–व्यवहार की सीख मिलती है। दीनों पर दया करने वाला दीनबंधु भगवान–तुल्य होता है। मांगने से मनुष्य की महत्ता घटती है। उत्तम स्वभाव वाले मनुष्य को कुसंग दुष्प्रभावित नहीं करती। सज्जन परोपकार के निमित्त ही सम्पत्ति का संग्रह करते हैं। धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने अतीत की चर्चा ऐसे करते हैं जैसे आश्विन मास के जलविहीन बादल गरजते हैं। अच्छे लोगों के रूठने पर उन्हें मना लेना चाहिए। आँख से निकलने वाले आँसू घर–भेदी की तरह हमारी व्यथा को जगजाहिर कर देते हैं। काम पड़ने व काम निकलने पर लोगों का व्यवहार भिन्न–भिन्न होता है।

नीति के दोहे

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय ।।

कदली, सीप, भुजंग–मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और ।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर ।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार ।
रहिमन फिरि–फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार ।।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरबर पियहिं न पान ।
कहि रहीम पर–काज हित, संपति सँचहि सुजान ।।

थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात ।।

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ।।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ।।

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं ।
जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माँहिं ।।

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल ।।

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय ।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ।।

बिपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर ।

नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भए भोर ।।

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम ।
तीन पैग बसुधा करो, तऊ बावनै नाम ।।

मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ।।

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल ।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ।।

अमृत ऐसे वचन में, रहिमन रिस की गाँस ।
जैसे मिसिरिहु में मिली, निरस बाँस की फाँस ।।

शब्दार्थ–

लघु – छोटा	तलवारि – तलवार	कदली – केला
सीप – सीपी	भुजंग – सर्प	स्वाति–एक नक्षत्र का नाम
काज – कार्य	कुसंग – बुरी संगति	विश – जहर
बादर – बादल	बसुधा – धरती	बावनै – वामन
पैग – पैर, कदम	जिह्वा – जीभ	कपाल – सिर
रिस – क्रोध	मिसिरिहु – मिश्री	नीरस –रसहीन।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. रहीम के काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है –

(अ) समासिकता (ब) शृंगारिकता
(स) नीति प्रवणता (द) अनुभव संकुलता ( )

2. विपत्ति में धन किसकी तरह लुप्त हो जाता है –

(अ) प्रातःकालीन तारों की तरह (ब) मित्र की तरह
(स) दुश्मन की तरह (द) हवा की तरह ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. ''काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर।।''

प्रस्तुत दोहे के माध्यम से रहीमदास जी ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति का वर्णन किया है ?समझाइए।

2. कवि के अनुसार बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति कैसे स्वभाव वाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति को बदल नहीं पाते हैं ?सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. रहीमदास जी ने सज्जन व्यक्ति के रूठ जाने पर भी बार–बार मनाने की बात क्यों कही है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ''थोथे बादर क्वार के ..... पाछिली बात।'' प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

2. ''नीति काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है।'' इस कथन के विषय में अपने विचार लिखिए।

3. रहीम ने मनुष्य को अपने मन की व्यथा अपने तक ही सीमित रखने को क्यों कहा है ?

4. 'माँगे घटत रहीम पद ..... तऊ बावनै नाम।'
प्रस्तुत दोहे का कथन स्पष्ट कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. ''मान सहित विष खाय ..... राहु कटायो सीस।'' दोहे की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

* * * * *